Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

मानवीय सरोकारों के संदर्भ में गुरु अमरदास की बाणी: एक मूल्यांकन

पूनम बाला

शोधार्थी

पी-एच.डी. (हिन्दी)

सी.टी. यूनिवर्सिटी

लुधियाना (पंजाब)

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

शोध सारांश

गुरु अमरदास द्वारा रचित बाणी का प्रकाश गुरु ग्रंथ साहिब में महला-3 के अंतर्गत किया गया है। उनके जीवन काल (1479 ई. से 1574 ई.) की सामाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, आर्थिक, नैतिक आदि परिस्थितियों को प्रकट करती हुई उनकी बाणी मानवीय सरोकारों की अद्भुत मिसाल प्रस्तुत करती है। मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति के लिए इन सभी परिस्थितियों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। गुरु अमरदास को मानवीय सरोकारों के प्रणेता कहा जा सकता है। उन्होंने जीवन की विभिन्न अवस्थाओं को निभाते हुए मानवीयता के लिए जो भी लाभदायक महसूस किया, उसका अपनी बाणी के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाने का प्रयास किया। गुरमति सिद्धांतो में अटूट विश्वास रखने वाले गुरु अमरदास ने मानवता के प्रचार प्रसार के लिए जगह जगह प्रचारक नियुक्त किये। गुरु अमरदास की बाणी आज भी मानवीय सरोकारों के संदर्भ में समाज को दिशा निर्देश देने योग्य है। अतः इस बाणी के पठन पाठन द्वारा मानवता की धारणा को सुदृढ़ किया जा सकता है।

सिक्ख पंथ की गुरु परम्परा का भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में एक विशिष्ट स्थान है। इस पंथ के गुरुद्वारों में सभी धर्मों के लोग श्रद्धा व प्रेम के साथ नतमस्तक होते है। भारतीय सभ्यता व संस्कृति की धरोहर के रुप में जीवित शब्द गुरु: गुरु ग्रंथ साहिब में 6 गुरु साहिबान (गुरु नानक देव, गुरु अंगद देव, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव, गुरु तेग बहादुर): 15 भक्तों, 11 भाटों व 4 निकटवर्ती सिक्खो सहित कुल 36 महापुरुषों की बाणी संकलित है। इन महापुरुषों द्वारा रचित बाणी में भारतीय सभ्यता व संस्कृति में प्राचीनकाल से समाहित मानवीय मूल्यों का वर्णन मिलता है। तीसरे गुरु 'गुरु अमरदास' जी गुरु गद्दी पर विराजमान होने से पहले जीवन के विभिन्न पहलुओं को देख-परख चुके थे। अपने जीवन के अनुभवों से उन्होंने जो भी देखा, समझा व जाना, उस ज्ञान को बाणी रुप में वर्णित किया। गुरु अमरदास की बाणी पढ़कर कहा जा सकता है -

"भले अमरदास गुण तेरे, तेरी उपमा तोहि बनि आवै"

गुरु अमरदास का जन्म 1479 ई. में अमृतसर जिले के गाँव बासरके में हुआ। इनके पिता का नाम तेजभान भल्ला व माता का नाम लखमीं जी था। इनका विवाह रामो जी से हुआ। इनके दो बेटे बाबा मोहन व बाबा मोहरी तथा दो बेटियां बीबी दानी व बीबी भानी थी। लगभग 42 वर्ष की उम्र तक अमरदास जी अपने पिता के साथ खेती के व्यवसाय में लगे रहे व परिवार का पालन करते रहे। लगभग 62 वर्ष की उम्र तक आप

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

लगातार हरिद्वार गंगा स्नान के लिये पैदल तीर्थ यात्रा पर जाते रहे। वैष्णव धर्म में आस्था होने के कारण वे हिन्दू रीति-रिवाजों के अनुसार तीर्थ यात्रा करके आध्यात्मिक शांति की प्राप्ति करना चाहते थे। एक बार यात्रा के दौरान एक ब्राह्मण द्वारा इन्हें 'निगुरा' कहकर सम्बोधित किया गया। इससे आहत होकर आप में गुरु धारण करने के लिए वैराग्य उत्पन्न हो गया।

एक दिन सुबह अमृत वेले गुरु अमरदास ने अपने भतीजे की पत्नी बीबी अमरो के मुँह से गुरु नानक बाणी का शब्द सुना। इस बाणी से वे बहुत प्रभावित हुये। अतः गुरु नानक गद्दी पर विराजमान गुरु अंगद देव जी को गुरु धारण कर लिया। इस समय आपकी आयु 62 वर्ष के लगभग थी। निरंतर 11 वर्ष तक (लगभग 73 वर्ष की आयु तक) आप गुरु अंगद देव के स्थान पर रहते हुये निष्काम सेवा करते रहे। आप निरंतर बाणी पढ़ते रहते व चिंतन मनन करते रहते। 73 वर्ष की अवस्था में गुरु अंगद देव जी ने आपको 'तीसरे नानक' की उपाधि देकर गुरु गद्दी सौंप दी। लगभग 22 वर्ष तक आप गोइंदवाल में गुरु गद्दी पर पर विराजमान रहते हुये बाणी की रचना करते हुये समाज सुधार के कार्यों में लगे रहे। आप एक महान रहस्यवादी संत, कवि, गुरु और समाज सुधारक थे। गूढ़ से गूढ़ आध्यात्मिक भेदों को सरल ढंग से करने में आप सिद्धहस्त थे। 907 पदों पर आधारित आपकी बाणी गुरु ग्रंथ साहिब में महला-3 के अंतर्गत संकलित है।

गुरु जी द्वारा रचित बाणी 'सबद', 'सलोक', 'छंत', 'वारा' आदि 17 रागों में दर्ज है। अन्य स्वतंत्र बाणियों में 'पट्टी', 'अलाहणियां', 'आनंद साहिब' आदि प्रमुख है। गुरु जी ने गुरमति के सिद्वान्तों, मानवीय समता के दृष्टिकोण, आध्यात्मिक अनुभवों को बड़े ही सरल ढंग से प्रस्तुत किया है। गुरु जी की भाषा मूलतः पंजाबी है। परन्तु उसमें सधुक्कड़ी या पुरानी हिन्दी के शब्द घुले-मिलें है। संस्कृत और अपभ्रंश के रुप उनकी बाणी में आम मिलते है। लेकिन शब्दावली में तत्सम शब्दों का प्रयोग कम और तद्भव शब्दावली का प्रयोग अधिक है। वार, सलोकु जैसे पंजाबी काव्य रुपों का प्रयोग करते हुये सधुक्कड़ी भाषा दब गई है तथा भाषा का पंजाबीपन उभरा है। सोलहवीं शताब्दी में अमृतसर के आसपास बोली जाने वाली माझी बोली का प्रामाणिक प्रमाण उनकी रचनाओं में मिलता है। इसलिये प्राचीन पंजाबी व अमृतसर की प्राचीन बोली के सबसे प्राचीन कवि कहे जा सकते है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

	राग	पद	अष्टपदीयां	अन्य बाणियां	छंद	सलोक	बारां पौड़ियां
1.	सिरी	31	8	-	-	33	-
2.	माझ	-	32	-	-	3	-
3.	गउड़ी	18	9	-	5	7	-
4.	आसा	13	15	पटी 18	पौड़िया 2	-	-
5.	गूजरी	7	1	-	-	42	22
6.	विहागड़ा	-	-	-	-	33	-
7.	वडहंस	9	2	अलाहनीया 4	अलाहनीया 6	40	-
8.	सोरठि	12	3	-	-	48	-
9.	धनासरी	9	-	-	-	-	-
10.	सूही	-	4	धनासरी	7	16	20
11.	बिलावल	6	1	वार सत 10 पौड़िया	-	24	-
12.	रामकली	1	5	आनंद 40 पौड़िया	-	23	21
13.	मारु	5	1	सोलहे 24	-	24	22
14.	मैरी	21	2	-	-	-	-
15.	बसंत	20	-	-	-	-	-
16.	सारंग	-	3	-	-	23	-
17.	मलार	13	3	-	-	26	-
18.	प्रभाती	7	2	-	-	-	-
19.	सलोकु वारां और वधीक	-	-	-	-	67	-

अलंकारों व बिम्बों का सटीक प्रयोग उनकी काव्य प्रतिभा को दर्शाता है। उनकी रचनाओं में प्रयुक्त शब्दावली सरल आसान मधुर सभ्य सहजमयी, संयमी व संतुलित है। गुरु अमरदास की बाणी को गुरु अर्जन देव ने 1604 ई में सम्पादित किया, जो कि रिश्ते में उनके दोहते (बेटी के बेटे) थे।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

अपनी बाणी द्वारा गुरु अमरदास ने समाज में जैसी विभिन्न भ्रांतियों को दूर करने का आदेश दिया। उनके समय में समाज में कई कुरीतियां भी प्रचलित थी जैसे जाति-पाति में भेद-भाव वर्ण-व्यवस्था सती प्रथा आदि। उन्होंने एक समाज सुधारक होने के नाते इन कुरीतियों को दूर करने के लिये गुरमति के सिद्धातों के प्रचार प्रसार पर बल दिया। इसके लिये उन्होंने 22 मंजियों की स्थापना भी की। गुरु अमरदास कहते है कि परमात्मा सर्वशक्तिमान व सर्वत्र विद्यमान है। उनके अनुसार संसार के प्रत्येक जीव-जंतु में एक ही ईश्वर की जोत विद्यमान है। अतः उन्होंने 'एकोंकारवाद' का नाद करते हुये लिखा भी है-

"सपत दीप सपत सागर

नव खंड चारि वेद दस असत पुराणा ।।

हरि सभना विचि तू वरतदा हरि सभना भाणा।।"

(पन्ना 84)

सर्वधर्म समानता के प्रबल समर्थक होने के कारण उन्होंने 'लंगर प्रथा' को सुदृढ़ किया। उनके स्थान पर सभी धर्मों जातियों से सम्बधित लोग मिलकर एक ही स्थान पर भोजन (लंगर) बनाते थे तथा एक ही (पंगत) पंक्ति में बैठकर भोजन खाते थे। गुरु अमरदास अनुसार सभी मनुष्य उस पर एक परम पिता परमात्मा का स्वरुप है, इसलिये कोई भी छोटा या बड़ा नहीं है।

"चारै वरन आखै सभु कोई ।। ब्रहमु बिदं ते सभ ओपति होई

माटी एक सगल संसारा ।। बहु विधि भांडे घड़ै कुमारा ।।"

(पन्ना 1128)

गुरु अमरदास एक सद्गृहस्थी की तरह अपने कव्यों का पालन करते हुये प्रभु सिमरन का संदेश देते थे। उनके अनुसार घर परिवार त्याग कर ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती है। मनुष्य के भीतर विद्यमान ईश्वर की प्राप्ति उसके अंदर व्याप्त विकारों जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि को दूर करके की जा सकती है। उन्होने कहा कि -

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

"हिरदै जिन कै कपटु वसै बाहरहु संत कहाहि ।।

त्रिसना मूलि न चुकई अंति गए पछुताहि ।।"

(पन्ना 491)

वर्तमान समाज में ऐसे कई सामाजिक प्राणी जो अपने आप को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए उचित अनुचित सभी मार्ग अपना लेते है और अपने असली गंतव्य से भटक जाते है। गुरु जी के अनुसार जो व्यक्ति बाहर से उम चरित्र के होने का दिखावा करते हैं लेकिन अगर उनके अंदर कपट व चतुराई भरी होती है तो वे व्यक्ति इस जन्म में भी भटकते हैं व अपने अवगुणों के बोझ को बढ़ाते हुये अंत समय पछताते है -

"मनमुख मुगध करहि चतुराई ।। नाता धोता थाइ न पाई ।।

जेहा आइआ तेहा जासी करि अवगण पछोतावणिआ ।।"

(पन्ना 114)

गुरु अमरदास ने अपनी वाणी द्वारा समस्त मानव जाति को यह संदेश दिया कि परमात्मा की ज्योति हरेक मनुष्य में विराजमान है अतः उसे अपने मूल को पहचान कर स्वतं रहकर सत कर्म करने चाहिये -

"मन तू जोति सरुप है, आपणा मूलु पछाणु ।"

(पन्ना 441)

गुरु जी ने 'हउमैं' अंहकार को नाम सेवा, शब्द, ज्ञान, भक्ति आदि का विरोधी माना है। गुरु जी के अनुसार मनुष्य के सामाजिक उत्थान, सभ्याचारक मेल-मिलाप, चरित्र निर्माण आदि के लिये विद्या प्राप्ति का होना अति आवश्यक है। विद्या द्वारा अच्छे गुणों का विकास होता है तथा दुर्गुणों जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि का विनाश होता है। सच्चे गुरु की शरण में आकर ही मनुष्य को ज्ञान, समझ, सहज, लाभ मिलते है और भ्रम भय का नाश होता है। वे कहते हैं कि सच्चे गुरु से मिले हुये ज्ञान द्वारा मनुष्य में कई शक्तियां जैसे ध्यान, सुमिरन, निर्मलता, सच्ची किरत कमाई, संयम, सत्संगति आदि कई मानवीय मूल्यों का अविर्भाव होता है।

"गुरु गिआनु प्रचंडु बलाइआ, अगिआनु अंधेरा जाई।"

(पन्ना 29)

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

गुरु जी नैतिक शिक्षा पर बहुत बल देते थे। उनके अनुसार बड़े बुर्जुगों द्वारा कही कई अच्छी अच्छी बातें मनुष्य पर बहुत प्रभाव डालती है। अतः अध्यापकों व विद्वान व्यक्तियों को हमेशा नैतिकता पूर्ण आचरण करते हुये शिष्यों में नैतिक गुणों का विकास करने का प्रयास करना चाहिये। उनके अनुसार -

"बाबाणीआ कहाणीआ पुत सपुत करेनि ।।

जि सतिगुर भावै सु मनि लैनि सेई करम करेनि।।"

(पन्ना 951)

गुरु अमरदास जी ज्ञान को सर्वोपरि मानते थे। उनके अनुसार सांसारिक ज्ञान के साथ साथ अगर आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति न हुई तो उसका आवागमन का चक्कर लगा रहेगा।

"अंतरि गिआनु न आइओ मिरतकु है संसारि।।

लख चउरासीह फेरु पइआ मरि जमै होइ खुआरु।।"

(पन्ना 88)

गुरु जी के अनुसार शरीर को स्वस्थ रखना भी ज्ञान प्राप्ति के लिये अनिवार्यता है। इनके अनुसार यह शरीर परमात्मा की बड़ी कीमती अमानत है। इसको संयमी आदतों से शुद्ध व स्वस्थ रखना चाहिये। उन्होंने कहा -

"हरि का मंदरु आखीऐ काइआ कोटुगड़ु ।।"

(वार रामकली)

गुरु अमरदास जी शरीरिक स्वास्थ्य तथा भानसिक स्वास्थ्य दोनों के संतुलित होने पर बल देते थे। उनके अनुसार शारीरिक व मानसिक रुप से स्वस्थ व्यक्ति ही आध्यात्मिक उन्नति कर सकता है। उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य में बाल्यकाल से ही सद्विचार विकसित किये जाने चाहिये जिसके लिये नैतिक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिये।

अंत में कह सकते हैं कि गुरु अमरदास जी नैतिक सरोकारों के पक्षधर थे। उनके द्वारा रचित बाणी में नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी दी गई है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इन शिक्षाओं की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका है। तकनीकी ज्ञान के साथ साथ मानवीय सरोकारों के प्रति भावी पीढ़ी को शिक्षा के माध्यम से जागरुक किया जाना आवश्यक है। गुरु अमरदास जी की बाणी इस पक्ष से अत्यंत लाभदायक है। इसके पठन-पाठन

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

द्वारा समाज में मानवीय सरोकारों के प्रति जागरुकता पैदा की जा सकती है। अतः में कहा जा सकता है -

"गुरु अमरदास की अकथ कथा है ।।

इक जीह कछु कही न जाई ।।"

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. 'गुरु अमरदास: राग रत्नाकर' (प्रोफैसर तारा सिंह)
2. गुरु इतिहास: दस पातशाहीआं (गिआनी सोहन सिंह सीतल)
3. 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकार' (डा. राजेन्द्र सिंह साहिल)
4. 'सचित्र जीवन साखीआं: दस गुरु साहिबान' (डा. अजीत सिंह औलख)
5. श्री गुरु अमरदास जी दी बाणी (प्यारा सिंह पदम)
6. गुरु अमरदास: जीवन रचना ते सिखिआ (तारन सिंह)
7. सुहज ते आनंद (तारन सिंह)
8. जीवन बृतांत: श्री गुरु अमरदास जी